

DR. KASHINATH PANDIT

Dr. Kashinath Pandit is the former Director of the Centre of Central Asian Studies, University of Kashmir. Dr. Kashinath Pandit is widely known as an outstanding scholar of Iranian and Central Asia Studies among the academic circles in the country and abroad, especially in the Republic of Tajikistan. He has contributed to the strengthening of cultural relations between India and Central Asian countries and Iran.

2. Born on February 06, 1927, Dr. Kashinath Pandit graduated from St. Joseph's College, Baramulla (Kashmir), and earned Master of Arts degree from the University of Punjab. In 1962, he obtained Doctoral degree in Iranian-Central Asian Studies from the University of Teheran, Iran. He is the first scholar from the State of Jammu and Kashmir to have earned Ph.D. from Teheran University.

3. After serving at the Post Graduate Department of Persian language and literature at the Kashmir University for about a decade and half, his services and expertise were requisitioned for establishing the Centre of Central Asian Studies at Kashmir University under the Area Study Centre scheme of the UGC. His visit to the Republic of Tajikistan on the invitation of the Chairman of Tajik Academy of Sciences in 1982 paved the way for bilateral academic interaction between Kashmiri and Central Asian scholars and faculties. As Director of the Centre, he trained scholars for conducting researches in Indo-Central Asian studies and researches in unexplored areas.

4. Dr. Kashinath Pandit is the recipient of Soviet Land Nehru Award of 1987 given by the then Vice President of India for enriching our cultural relations with Farsi/Tajik and Dari speaking peoples in the region. His travelogue of Tajikistan titled My Tajik Friends has been translated into Russian. In 1994, the President of India awarded him Certificate of Merit for contribution to classical language and literature. In 2013, the Iran Culture House honoured him with Sa'adi Award. In recognition of his service to Indo-Tajik cultural relations, the President of Tajikistan nominated him as Honorary Member of Tajik Cultural Organization named Paywand.

5. Dr. Kashinath Pandit has authored eight books and published research articles in numerous academic journals at home and abroad. In 2002 he was invited to deliver lecture at eight American Universities including Berkeley and Illinois. He has participated in numerous international conferences in different countries of the world including Japan, Thailand, The Netherlands and Hungary.

6. Dr. Kashinath Pandit is also an eminent journalist and a human rights activist who has made more than a dozen interventions at the UN Human Rights Council in Geneva. As a journalist he has been writing insightful commentaries on current history and politics in the Central and South Asian region.



डॉ. काशी नाथ पण्डित

डॉ. काशी नाथ पण्डित सेन्ट्रल ए.सी.आई.अध्ययन केन्द्र, कश्मीर विश्वविद्यालय के पूर्व निदेशक हैं। आपको देश एवं विदेश, विशेष रूप से ताजिकिस्तान गणराज्य के शैक्षणिक जगत में व्यापक रूप से ईरानी एवं सेन्ट्रल एशिया अध्ययनों के एक उत्कृष्ट विद्वान के रूप में जाना जाता है। आपने भारत तथा केन्द्रीय एशियाई देश और ईरान के बीच सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने में योगदान किया है।

2. 06 फरवरी, 1927 को आपका जन्म हुआ था। आपने सेन्ट जोसफ कॉलेज, बारामुल्ला (कश्मीर) से स्नातक की पढ़ाई की तथा पंजाब विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि अर्जित की। वर्ष 1962 में आपने तेहरान विश्वविद्यालय, ईरान से ईरानी एशियाई अध्ययन में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। आप जम्मू और कश्मीर राज्य के पहले ऐसे विद्वान हैं, जिन्होंने तेहरान विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की।

3. कश्मीर विश्वविद्यालय में पारसी भाषा एवं साहित्य के परास्नातक विभाग में लगभग डेढ़ दशक तक सेवा करने के बाद विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्र योजना के अंतर्गत कश्मीर विश्वविद्यालय में सेन्ट्रल एशियाई अध्ययन केन्द्र स्थापित करने के लिए आपकी सेवाओं एवं विशेषज्ञता की आवश्यकता महसूस की गई। वर्ष 1982 में ताजिग विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष के आमत्रंण पर आपने ताजिकिस्तान गणराज्य का दौरा किया तथा कश्मीर एवं सेन्ट्रल एशियाई विद्वानों तथा फैकल्टी सदस्यों के बीच द्विपक्षीय शैक्षणिक वार्तालाप का मार्ग प्रशस्त किया। इस केन्द्र के निदेशक के रूप में आपने छात्रों को अनछुए रह गए क्षेत्रों में भारत-सेन्ट्रल एशियाई अध्ययन और शोध कार्य करने के लिए प्रशिक्षित किया।

4. आपको फारसी, ताजिग तथा उस क्षेत्र में दारी बोलने वाले लोगों के साथ हमारे सांस्कृतिक संबंधों को समृद्ध बनाने के लिए भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति द्वारा 1987 का सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड प्रदान किया गया। आपकी ताजिकिस्तान की यात्राओं के विवरण संबंधी 'माई ताजिग फ्रैंडस" नामक पुस्तक को रूसी भाषा में अनुवादित किया गया है। वर्ष 1994 में भारत के राष्ट्रपति ने आपको उत्कृष्ट भाषा एवं साहित्य के प्रति किये गए आपके योगदान के लिए सर्टिफिकेट ऑफ मैरिट पुरस्कार प्रदान किया। वर्ष 2013 में ईरान कल्चर हाउस ने आपको 'सा-आदि' पुरस्कार से सम्मानित किया। भारत-ताजिकिस्तान सांस्कृतिक संबंधों के प्रति किये गए आपके योगदान के लिए ताजिकिस्तान के राष्ट्रपति ने आपको ताजिकिस्तान सांस्कृतिक संगठन जिसको पेवैन्ड नाम दिया गया, के मानद सदस्य के रूप में नामित किया गया।

5. आपने आठ पुस्तकें लिखी हैं तथा देश एवं विदेश के अनेक शैक्षणिक जर्नलों में शोध लेख प्रकाशित किये। वर्ष 2002 में आपको बर्कले एवं ईलीनायज सहित आठ अमेरिकी विश्वविद्यालयों में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। आपने जापान, थाईलैंड, नीदरलैंड एवं हंगरी सहित विश्व के विभिन्न देशों में अनेकानेक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में हिस्सा लिया।

6. आप एक प्रख्यात पत्रकार तथा एक मानवाधिकार कार्यकर्ता भी हैं जिन्होंने जेनेवा स्थित संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद में एक दर्जन से भी अधिक हस्तक्षेप किये हैं। एक पत्रकार के रूप में आप सेन्ट्रल एवं दक्षिण एशियाई क्षेत्र में वर्तमान इतिहास एवं राजनीति पर जानकारियों से भरपूर टिप्पणियां लिख रहे हैं।